

## विश्व मानवीयता के निर्माण में रामचरितमानस की भूमिका

K. Jayalakshmi

Department of Languages, School of Social Sciences and Languages, VIT Vellore

Email Id: [kjayalakshmi@vit.ac.in](mailto:kjayalakshmi@vit.ac.in)

“हिमालयं समारभ्य यावत् इन्दु सरोवरम् । तं देवनिर्मितं देशं हिन्दुस्थानम् ॥”

याने हिमालय पर्वत से शुरू होकर भारतीय महासागर तक फैला हुआ ईश्वर निर्मित देश है, “हिन्दुस्तान” और यह वह देश है जहाँ ईश्वर समय समय पर जन्म लेते हैं और सामाजिक सभ्यता की स्थापना करते हैं। भारतीय संस्कृति समस्त मानवीय गुणों की समन्वयात्मक समष्टि कहा जा सकता है क्योंकि इसमें “सर्वोऽपि सन्तु सुखिनः” का शंखनाद है तो दूसरी ओर “वसुधैव कुटुम्बकम्” की कल्याणकारी भावना समाहित है। हमारे शास्त्रों में बताया गया है :

“एतद्देशप्रसूतस्य शकसाद् जन्मनः । स्व स्वचरित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्वमानवाः॥”

अर्थात् ऐसी श्रेष्ठतम भारतीय संस्कृति पर किस सपूत को गर्व न होगा, जिसमें विश्व के समस्त मनुष्यों को उच्चादर्शों की शिक्षा देने की अद्भुत क्षमता है। संस्कृति वास्तव में समाज के उच्चतम मूल्यों की चेतना है जो चित्तवृत्तियों, भावनाओं और विभिन्न सामाजिक प्रथाओं में अभिव्यक्त होती है। रेनाल्ड विलियम्स इसे सम्पूर्ण जीवन शैली मानते हैं जिसका समाज के ठोस भौतिक व्यवहारों में ऐतिहासिक रूप से अनुसरण और विकास रहता है।<sup>1</sup>

आदिकाल में मानव की जीवन - विधि से संस्कृति का उद्भव हुआ। जैसे मानव विकास करता गया उसकी मान्यताएं आस्थाएं प्रथाएं आदि स्थापित होने लगीं और ये संस्कृति के आधारभूत अंग बन गयीं। संस्कृति किसी एक व्यक्ति के प्रयासों का फल नहीं और न ही किसी एक काल का प्रतिफल। यह तो एक अविरल अजस्र धारा है जिसमें युग युग की मान्यताएं विकास करती रहती हैं। “संस्कृति किसी भी देश के जातीय जीवन की चरम उपलब्धि है जिसका अनुसरण कर लोग सुख - शांति का अनुभव कर सकते हैं।”<sup>2</sup>

भारतीय संस्कृति मानव जीवन की ऊर्जा के मूल स्रोत को खोजती है और उसके साथ प्रवाहित होती है । हमारे देश की जलवायु, भौगोलिक संरचना, प्राकृतिक सम्पदा, वानस्पतिक समृद्धि आदि के साथ मनुष्यों का रहन - सहन, खाना - पाना, आचार - विचार आदि जुड़े हैं इसलिए भारतीय संस्कृति को संसार में सर्वदा सराहा जाता है और उसे सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वव्यापी माना जाता है । हमारे धरोहर आज मानवीय संस्पर्श से दूर होती जा रही है । हमारे मानवीय संबंध, नीति, मूल्य तथा त्यौहारों के पीछे हमारी भूमिकाएँ सुदृढ़ एवं सुसंस्कृत मानवीय जीवन के लिए प्रेरक व पूरक हैं आज उसका लोप हो रहा है । तुलसीदास का रामचरितमानस अपने युग की संस्कृति को चित्रित करनेवाला प्रतिनिधि काव्य है । सदियों से हम अपनी समस्या का समाधान रामचरितमानस में ढूँढते आ रहे हैं । इसमें कर्तव्य, त्याग और प्रेम के आदर्श चित्रित हैं जो मानवीय स्वभाव के आदर्श हैं और मानव के लिए मार्ग - दर्शक । यह एक धार्मिक ग्रंथ ही नहीं वरन् एक सांस्कृतिक दस्तावेज़ भी है जो रंग, मुल्क आदि की सीमाओं को लाँग कर आम जनता के दिलों पर गहरा प्रभाव डालती हैं और अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में उससे लाभ उठा सकते हैं ।

समग्र भारत की अपनी एक मूलभूत संस्कृति है जो आर्य, द्रविड़, आदिवासी आदि विविध संस्कृतियों के समन्वय का परिणाम है । “ मानस” भारतीय साहित्य में इसलिए विशिष्ट स्थान रखता है क्योंकि यह महाकाव्य भारतीय संस्कृति के व्यापक रूप को चित्रित करने के साथ इस लोक संस्कृति एवं प्रादेशिक विशेषताओं का चित्रण करता है । इसका एक उदाहरण है :

“निज बुद्धि बल भरोसा मोहि नाहीं । तातेविनय करउं सब पाही ।”<sup>3</sup>

रामचरित मानस में लोक जीवन के चित्र अंकित हैं, जो सामान्य जीवन के अनुभवों से अलग नहीं है । जन्म - मरण, शादी- ब्याह, पूजा - अर्चना, लोकाचार आदि से जुड़े प्रसंग मानस में मिलता है जिसमें स्थानीयता की सौधी महक मिलती हैं । इसके प्रत्येक पात्र समाज के सम्मुख कई आदर्श प्रस्तुत करते हैं । दशरथ सत्य प्रतिज्ञा का, राम - पितृभक्ति और आदर्श पुत्र का, लक्ष्मण भ्रातृ भक्ति एवं सहन भक्ति का, कौशल्या और सुमित्रा प्रेम मयी माँ, सीता पतिव्रता नारी की, उर्मिला सहिष्णुता की और कैकयी पश्चात्तप का आदर्श पेश करती हैं ।

आज के वैश्वीकरण के युग में भारतीय समाज और परिवार व्यवस्था को खूब छला है । परिवार बिखर और टूट रहे हैं और वैमनस्यत बढ़ रही है । भारतीय समाज में संयुक्त परिवार

की परिकल्पना दीर्घ काल से है । पारिवारिक जीवन में संतुलन और सौमनस्य की स्थापना करने के लिए पितृ - प्रेम , मातृ - प्रेम, भ्रातृ - प्रेम , पति- प्रेम और संतान प्रेम जैसे पारिवारिक आत्मीयता की भावनाओं को जीवंत बनाने के लिए इन पात्रों का युगानुरूप नवीनीकरण किया है । आज के वैज्ञानिक युग के सैलाब में संयुक्त परिवार टूट रहे हैं पर मानस आज भी इसलिए प्रासंगिक है क्योंकि इसमें आदर्श पिता, भाई, माता, बेटे की अवधारणा मिलती हैं । एक आदर्श बेटा का उत्तम उदाहरण है :

“सुनू जननी सोई सुतु बड़भागी । जो पितु मातु बचन अनुरागी ॥

तनय मातु पितु तोषनिहारा । दुर्लभ जननि सकाल संसारा ॥”<sup>4</sup>

व्यक्ति और परिवार से समाज बनता है और ये दोनों समाज की आधार शिलाएं हैं । परिवारों में सुख एवं शांति के साथ लोग जीवन यापन करते हैं तो समाज में भी सुख और शांति बनी रहती है । तुलसी ने मानस में आदर्श परिवार का चित्रण कर उसका अनुकरण एवं अनुसरण कर पारिवारिक जीवन को आनंदमय बनाने के संकेत दिये हैं । साथ ही समाज में सुख एवं शांति के साथ -साथ प्रेम, समता , संगठन, आदर जैसे मानवीय मूल्यों को स्थापित करने की बात भी कही है । इसका एक उदाहरण है

“ बधुन्ह समेत कुमार सब रानिन्ह सहित महीसु ।”<sup>5</sup>

16 वीं शती में रचित इस ग्रंथ में विभिन्न संस्कृतियों का संगम प्रस्तुत कर लोग मानस को मानवीय संस्कृति की श्रेष्ठता का दिग्दर्शन कराया है । मानव मूल्यों से परिपूर्ण यह ग्रंथ लोक कल्याण की भावना से ओतप्रोत अद्भुत और अनुपमेय कृति है जिसमें वैयक्तिक, सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक एवं जनकल्याण परक एवं मानव मूल्यों का पूर्ण परिपाक हुआ है। व्यक्तित्व निर्माण में वैयक्तिक मानव मूल्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । वर्तमान युग में हमारे समाज में दूषित संस्कृतियों का प्रहार हो रहा है जिससे समाज संक्रमित हो रहा है । बाजरवाद के प्रभाव से मनुष्य यंत्रवत और निर्जीव होता जा रहा है और शांति की तलाश कर रहा है और ऐसी स्थिति में यह साहित्य जन के मन का रंजन करता है ।

मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास में मूल्यों का बहुत अधिक महत्व है । मानस भारतीय जीवन मूल्यों को पुनः स्थापित करने का उत्तम साधन है, क्योंकि राम ही भारतीय

संस्कृति के चरम मूल्य हैं । तुलसी अपने राम कथा के माध्यम से लोक कल्याण का मार्ग स्वीकार करते हैं और देश काल की सीमा को पार करके जन मानस की जीवन धारा को नया आयाम प्रदान करते हैं । इसमें जाति, कुल की श्रेष्ठता, धन संपन्नता से बढ़कर मानवता को प्रमुख स्थान दिया गया है । उदाहरण के लिए:

“गाउँ जाति गुहँ नाउँ सुनाई । कीन्ह जोहरु माथ महि लाई ।”<sup>6</sup>

करत दंडवत देखि तेहि भरत लीन्ह उर लाइ ।”<sup>7</sup>

इन पंक्तियों में निषाद राज गुह अपनी निम्नता को स्पष्ट करते हैं और भरत से दूर रहते हैं पर भरत इसको नज़र अंदाज़ करते हुए उसे स्पर्श कर उसे अपनी छाती से लगा लेते हैं। शबरी से बड़ा अधम और शूद्र होगा जिसकी जुठी बेरों को खाकर उसकी प्रशंसा करते हैं और उसे मानव जीवन का सर्वोच्च पद प्रदान करते हैं । शबरी और राम का संवाद इसी तथ्य का उदघाटन करता है :

“कोहि विधि अस्तुति करौं तुम्हारी । अधम जाति में जड़ मति भारी ॥

अधम तो अधम अधम अति नारी । तिन्ह महें मैं मति मंद अधारी ॥”<sup>8</sup>

इन में निषाद का राम और भरत से मित्रता, शबरी को मुक्ति प्रदान करना और संरक्ष कुल के विभीषण को गले लगाकर उनकी समस्या का समाधान करना मानवता प्रशंसनीय ही नहीं अपितु आज के युग में ग्रहण करने योग्य बातें हैं। वैयक्तिक मूल्यों में ‘परोपकार’ सबसे महत्त्वपूर्ण है जिसका आशय दूसरों की भलाई करना है । इसके अनुरूप ही व्यक्ति और समष्टि का कल्याण किया जा सकता है । सभी पात्र परोपकार से परिपूर्ण हैं। श्री राम का सम्पूर्ण व्यक्तित्व शैर्य, मानवता, विनय, परोपकार से भरा है । अतः विश्वामित्र को इसका ज्ञान होने से यज्ञ के रक्षार्थ राजा दशरथ से याचना करने जाते हैं:

“असुर समूह सतावहि मोही । मैं जाचन आयउँ नृप तो हीं ॥”<sup>9</sup>

राजा दशरथ का व्यक्तित्व भी परोपकार से परिपूर्ण है । विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा एवं लोक कल्याण की भावना से ही राजा दशरथ न चाहते हुए भी विश्वामित्र को अपने दोनों बेटों को सौंप देते हैं ।

“सब सुत मोहि प्राणा कि नाई । राम देत नहिं बनई गोसाई ॥”<sup>10</sup>

सौंप भूप रिसिहिं बहुविधि देह असीस ॥”<sup>11</sup>

मानस में यह भावना आप्लावित है । दया, करुणा जैसे भाव मानस में दृष्टिगोचर हैं । अतः यह मानव मूल्य मात्र उस समय में ही नहीं अपितु वर्तमान में भी अत्यंत प्रासंगिक है और इन मूल्यों का मानव समाज में अत्यधिक महत्त्व एवं उपादेयता है ।

“अयं निजःपरोवेति गणना लघु चेतसाम् ॥ उदरचिरतानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥”<sup>12</sup>

‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ के इस मूल मंत्र को अपनाना ही भारतीय संस्कृति का धरोहर है । सांस्कृतिक एकता ही रामकथा का प्रमुख उद्देश है । भारतीय संस्कृति का दस्तावेज़ होने के कारण इसकी महत्ता बढ़ गयी है । यह मात्र भारतवासी की नहीं अपितु भारत से बाहर बसे भारतीय के लिए भी महत्त्वपूर्ण पोथी है । डॉ. मोहन के गौतम ने तुलसी विचार गोष्ठी में यह याद दिलाया है कि सूरनाम, नेदरलैंड आदि के प्रवासी भारतीयों के जीवन मूल्य और परंपरा के अनुपालन में रामचरितमानस की अहम् भूमिका है ।<sup>12</sup> मध्यकालीन हिन्दी साहित्य का कीर्ति कलश माने जाने वाला यह साहित्य देशी साहित्य से परे होकर विश्व साहित्य की कोटि में स्थान बना चुकी है । अनेक देशी - विदेशी अनुवादों द्वारा रामचरितमानस आज सार्वदेशिक और सार्वकालिक हो गया है । भारत के बाहर म्यांमार, इंडोनेयशिय, कोम्बोडिया, लाओस, चीन आदि देशों में इसका रूपान्तरण दृष्टिगत हैं। तो हमारे देश में यह भाषिक दायरे को लाँघकर भिन्न भाषाओं में इसकी रचना की गयी । जन भाषा में ‘मानस’ विख्यात हैं, तो तमिल में ‘कंबरामायण’, कन्नड में ‘पंपरामायण’, तेलुगु में ‘रंगनाथ रामायण’, केरल में ‘अध्यात्मरामायण् किळिप्पाट्टु’ । इन सभी कृतियों में वैयक्तिक, मानवीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक भावना को उजागर कर विश्वबंधुत्व की स्थापना करने में यह सफल हुई है । इसमें प्राचीन एवं नवीन संस्कृति झलकते हैं। आज के इस युग में जहां भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण, उपनिवेशवाद, बाज़ारवाद के चक्कर में मनुष्य अपना अस्तित्व भूलकर और संस्कृति के विभिन्न मूल्यों के हास में लगा है वहाँ मानस हमें यह संदेश देता है कि लोक कल्याण की भावना इन हालातों में भी संभव है क्योंकि तुलसी ने मानस में विभिन्न संस्कृतियों का समन्वय करके सांस्कृतिक एकता का परिचय इन पंक्तियों में दिया है:

“कीरति, भनिति, भूमि भलि सोई । सुरसरि राम सब कहं हित होई ॥”<sup>13</sup>

सत्य, अहिंसा, मर्यादा, संस्कारों, त्योहारों, रीति -रिवाजों को महत्वपूर्ण स्थान देने वाली यह कृति भारतीय संस्कृति का आधार स्तंभ है । जब इन घटते भावनाओं का पुनः प्रचार और विकास करेंगे तब मानवता का पुनः विकास संभव है । आज जहां पूंजीवादी सभ्यता और आतंकवाद विश्व भर में फैल रहा है और इसका प्रभाव हर कहीं दिखाई दे रहा है और जहां क्षमा, प्रेम, करुणा, दया आदि के स्थान पर आतंक, आपसी होड़ एवं संबंध हीनता का रूप देख सकते हैं वहाँ तुलसीदास का कहना है कि जिस दिन हम अपने को मर्यादित रखेंगे उस दिन समाज ही नहीं पूरे विश्व का वातावरण बदल जाएगा ।

राम कथा साहित्य भारतीय संस्कृति और सभ्यता को एक दिशा ही नहीं देता बल्कि उसे परिपूर्ण करता है । वर्तमान युग में यह वैयक्तिक न रहकर पूरे समाज को नयी दिशा की ओर ले जाता है । आदर्शत्व, सोलह संस्कार, गृहस्थ जीवन, वर्णाश्रम आदि का संदेश वाहक यह ग्रंथ मात्र अपने युग का ही नहीं वर्तमान युग को भी प्रभावित करती हुई नया संदेश देती चली आई है । आज यह मात्र साहित्य न रहकर दृश्य - श्रव्य माध्यम का प्रमुख अंग बन गया है । वाल्मीकि और तुलसी रामायण के साथ - साथ प्रादेशिक भाषाओं में रचित राम कथा को आधार बनाकर कई धारावाहिक पेश किए गए हैं और पेश किए जा रहे हैं । साथ ही एनिमेशन भी धारावाहिक रूप में निकल रहे हैं जिससे आज की युवा पीढ़ी ही नहीं बाल पीढ़ी भी प्रभावित हो रहे हैं और कई मूल्यों को अपने जीवन में आत्मसात भी कर रहे हैं । समय परिवर्तन और उसमें परिवर्धन कर उसकी प्रासंगिकता के साथ उसे नए रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है ।

आज शायद विश्व में कोई ऐसा साहित्य हो जिस पर इतना लिखा गया हो । विश्व की विभिन्न भाषाओं में आज बड़ी तादाद में रामायण के अनुवाद प्रकाशित हो रहे हैं । अर्थात् रामकथा साहित्य आज विश्व साहित्य को एक नयी दिशा की ओर ले जाता दिखाई देता है ।

वर्तमान युग विघटन का युग है । संबंधों की पावनता का पतन हो रहा है । अतः आधुनिक जीवन में इस साहित्य की प्रासंगिकता इसलिए है क्योंकि यह हमें मात्र आपस में ही नहीं जोड़ती बल्कि मानव - मूल्यों को आत्मसात करने की प्रेरणा भी देती है । साथ ही यह भारतवंशियों की आत्मा को निरंतर जोड़ते हुए एक अडिग प्रहरी की तरह हमारी सांस्कृतिक

अस्मिता की रक्षा कर रही है । मानस कालजयी रचना है जिसमें जीवन मूल्य, आदर्श, नीति का सम्मिश्रण हुआ है और इसके पठन - पाठन से हृदय को शांति और मस्तिष्क को एक दिशा मिलती है । यह भारतीय संस्कृति का दर्पण और भारतीय परंपरा , वांग्मय और भारतीय मेरुदण्ड है ।

## पाद टिप्पणी

1. Williams ,Reymond. Culture & Society , Introduction, Pg.XVIII
2. खन्ना, जनक . तुलसी काव्य में प्रकृति तथा खगोल, pg. 37
3. मानस, 1/7/2
4. वही 2/40/4
5. वही 1/352
6. वही 2/192/4
7. वही 2/193
8. वही 3/36
9. वही 1/207/5
10. वही 1/207/3
11. वही 1/208 (क)
12. महोषनिषद् vi -71-73
13. Abstract. International Conference on Tulsidas& his works.Miami.Florida. USA Nov; 26-28,1999.
14. मानस 1/14 क/9
15. Blucke,Fr.C. 'The Ramayana Tradition of Asia' , London -1980. Pg. 648

## संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. रामचरितमानसगीता प्रैस, गोरखपुर सं . 2000
2. तुलसीदर्शनसीमांसा,डॉ.उदयभानुसिंह सं.2015
3. भारतीय साहित्य पर रामायण का प्रभाव , डॉ चंद्रकांत बांदिबडेकर
4. रामकथा उत्पत्ति और विकास , फादर कामिल बूलके
5. रामकाव्य परंपरा का विकास और प्रभाव – डॉ आशाभारती
6. रामचरितमानस : विविध संदर्भ – मुकंदलाल मुंशी
7. Abstract. International Conference on Tulsidas& his works.Miami.Florida. USA
8. 'The Ramayana Tradition of Asia' ,Father CamilBulke London -1980.